ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 1 अक्टूबर - नवम्बर 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

सुख समृद्वि के लिए कैसे करें दीपावली पूजन	डा. महेश पारासर	4
दक्षिणा वर्ती शंख पूजन से दूर होती है दरिद्रता	डा. रचना भारद्वाज	7
समृद्धिदायक महालक्ष्मी का पूजन एवं उन्हें प्रसन्ना करने के उपाय	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	8
मनोकामनाओं की पूर्ति में साहयक है गोमती चक्र	पुष्पित पारासर	9
महापर्व दीपावली	मोनिका गुप्ता	10
दीपावली पर लक्ष्मी जी का पूजन		
गणेश जी के साथ क्यों?	श्रीमती रेखा जैन	11
शूभ दीपावली	पं. दयानन्द शास्त्री	12
स्थायी लक्ष्मी प्राप्ति हेतु अद्भुत टोटके	पं. अजय दत्ता	13
महालक्ष्मी पूजन के टोटके	पवन कुमार मेहरोत्रा	13
कैसे करे इस दीपावली पर महालक्ष्मी को प्रसन्ना	श्रीमती रेनू कपूर	14
धनत्रयोदशी धन्वन्तरी जयंती	पं. विष्णु पाराशर	15
लक्ष्मी प्राप्ति के उपयोगी यंत्र	पं. देव स्वरुप शास्त्री	15
वाणी बने वीणा	सुरेश अग्रवाल	16
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	17—18
इधर का न उधर का	विजय शर्मा	19
पूजा की सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर

ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

सुख समृद्धि के लिए कैसे करें दीपावली पूजन

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें निश्चित रूप से दीपावली प्रकाश का पर्व है लेकिन सबसे पहले हमें प्रकाश की सही परिभाषा समझी होगी। प्रकाश का तात्पर्य केवल दीपक मोमबत्ती और बिजली से कृत्रिम प्रकाश करना कदापि नहीं है, यदि उजाला करना ही दीपावली है तो इसका कोई महत्त्व नहीं है। क्या महत्त्व है ऐसे प्रकाश का जो केवल एक ही रात के लिये किया जाये अगली रात फिर अन्धकारामय दिखाई दे? सही अर्थो में प्रकाश तो वो है जो जीवनपर्यन्त रहे, जीवन के अंधेरे मिटाकर जीवन को जगमग करता रहे और प्रकाश पर्व दीपावली का यही अर्थ है, यही इसकी विलक्षणता है। यही इसका संदेश है कि इस दिवस का सदुपयोग करके हम अपने जीवन में लक्ष्मीरूपी समृद्धता का इतना तीव्र प्रकाश करें जिसकी जगमगाहट से दरिद्रता कर्ज और असफलता रूपी अंधकार जीवन में कभी भी उत्पन्न न हो सके, हमारा पूरा जीवन सम्पन्नता और ऐश्वर्य के प्रकाश से जगमगाता रहे, और जो बन्धु लक्ष्मी तंत्र–पर्व (दीपावली) के महत्त्व को समझकर इस दिवश की तेजस्विता का सही सदुपयोग कर लेते हैं निश्चित रूप से वे जीवनपर्यन्त अभाव, दरिद्रता और असफलता रूपी अन्धकार से अछूते रहते हैं एंव मुक्त रहते हैं।

आय की वृद्धि यानी लक्ष्मी का आगमन। वैसे तो लक्ष्मी जी को हमेशा ही पूजा जाता है लेकिन दीपावली पर लक्ष्मी–गणेश की आराधना का विशेष महत्व हिन्दू धर्म में बताया गया है। दीपावली पर सभी लक्ष्मीजी–गणेशजी की पूजा पूर्ण मनोयोग से करते है। इस वर्ष पर थोड़े से विशेष उपाय कर लिए जायें तो नवीमन वर्ष पर्यन्त माँ लक्ष्मी की साधक और उसके परिवार पर विशेष दृष्टि रहती है। इस वर्ष **दीपावली 26 अक्टूबर 2011** दिन बुधवार को मनायी जायेगी। हिन्दूओं के लिए इस पर्व का बहुत महत्व है। इस दिन सभी परिवार लक्ष्मीजी और गणेशजी की पूजा श्रद्धा

श्री महा धन दाता लक्ष्मी यंत्र

श्री लक्ष्मी यंत्र

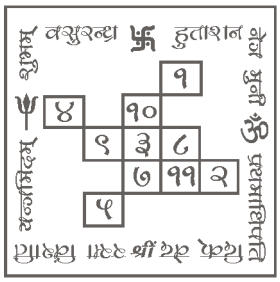

श्री गणेश यंत्र

श्री धन वापसी यंत्र

श्री विष्णु यंत्र

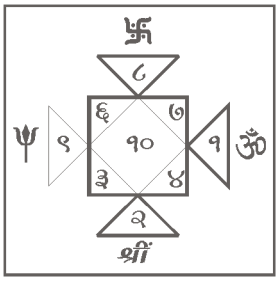

श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र

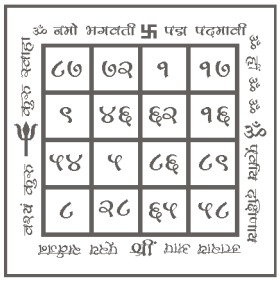

श्री गरुण वीसा यंत्र

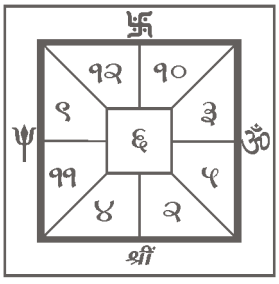

भाव से करते हैं। सभी घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों में महालक्ष्मी का पूजन अवश्य करते हैं। व्यापारी वर्ग खाता वही तिजोरी ओर तराजू की पूजा करते है। दीपावली के दिन लक्ष्मीजी–गणेशजी की पूजा करने से वर्ष भर लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। दीपावली पर पूजा तो सभी करते है, परन्तु किस प्रकार से और किस चीज के साथ पूजा की जाऐ तो वर्ष पर्यन्त लक्ष्मी का स्थायी निवास रहे। हम **श्री महा धनदाता लक्ष्मी जी यंत्र** का विधान वताते है।

श्री महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र– दीपावली के पूजन में श्री महाधन दाता लक्ष्मी यंत्र की पूजा करने से माँ लक्ष्मी की कृपा चिरकाल तक बनी रहती है। माँ लक्ष्मी की स्थिरता के लिए ही इस यंत्र की पूजा दीपावली पर एंव सदन की जाती है। इसकी पूजा बहुत ही आसान है।

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल,फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लढु, फल, गंगाजल, दूध , दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

भवन के मुख्य द्वार पर

।। श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी धन आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव पूरिपूर्णतदस्तु मे ॥

मंत्र का सरल भाव है कि मैं मंत्र, क्रिया , विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधि

सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, कपडें से सिर ढके। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। दोनों के बीच में **श्री महा धन दाता लक्ष्मी यंत्र** स्थापित करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार **''ओउम्''** कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धन कहते है।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें न इस प्रकार खर्च करें। **ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रयोदयात्॥** अथवा **श्री गणेशायः नमः** कहकर गणेश जी एवं श्री महाधनदाता लक्ष्मी यंत्र पर ऊपर सीधे हाथ की ओर बने गणेश यंत्र पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाहन के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है।

संकल्प में सम्वत्, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर लक्ष्मी पूजन अहम्करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रूपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-**श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत्** 2068**, कार्तिक मासे कृष्णं पक्षे अमावस्यां बुध वासरे** (अपना नाम अपना गोत्र) एवं **गोत्रेत्पन्न** पत्नी साथ हो तो **सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम,** (यदि मित्र मण्डली हो तो) **इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम,**

मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

''**ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्** अथवा **ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः** ।। कहकर लक्ष्मी जी एवं लक्ष्मी यंत्र पर चावल चढ़ावें।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। **पुष्पासनम् सर्मपयामि** बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश-लक्ष्मी के आगे रखकर कहें **अर्घ्यम सर्मपयामि** गंगाजल (पानी) दौने में रखकर कहें '' **आचमनीयम् सर्मपयामि** ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें।'' **स्नानम् सर्मपयामि** ''इसके बाद पारद के गणेश-लक्ष्मी या चाँदी का रुपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' **पंचामृत स्नानम् सर्मपयामि** ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' **स्नानम् सर्मपयामि** ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' **वस्त्रम् सर्मपयामि** ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' **मंगल सूत्रम् सर्मपयामि** ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' **यज्ञोपवीतम् सर्मपयामि** ''लक्ष्मीजी को मोती की माला पहनावें'' **मुक्ता मालाम् समप्रयामि** ''गणेशजी पर चन्दन लक्ष्मीजी पर रोली'' **गंधम् सर्मपयामि** ''चावल लगावें'' **अक्षताम् सर्मपयामि** ''फूलमाला पहनावें'' **पुष्पमाल्याम् सर्मपयामि** ''मीठा, खील, बतासे, खाड़ के खिलौने, पाँचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' **भोजनम् सर्मपयामि** ''जल चढ़ावें'' **आचमनीयम सर्मपयामि** ''फल चढ़ावें'' **फल सर्मपयामि** ''गोला या नारियल चढ़ावें'' **अखंड ऋतुफलम् सर्मपयामि** ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' **ताम्बूल पुंगीफल आदि सर्मपयामि** ''दक्षिणा चढ़ावें'' **शुभ दक्षिणाम् सर्मपयामि** '' इसी प्रकार आप **विष्णु यंत्र** एंव **गरुण यंत्र** की पूजा करें। उसके बाद **कुबेर यंत्र** एंव **लक्ष्मी वाहन यंत्र** की पूजा करें।

पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें। श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें '' **हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि** ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रुपया, लड्डू, मिठाई, खील-बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफ्तर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बाँट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें।

इसके बाद कमल गट्टे की माला से लक्ष्मी जी एवं कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

कुबेर मंत्र

यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतये धनधान्य समृद्धि मे देहदापय स्वाहा।

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में **बसने की पुड़िया** (पंसारी के यहाँ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' **ॐ दीपेभ्यो नमः** ''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतियाँ लगाकर तथा फूल डालकर आरती का दीपक जलावें और आरती करें।

आरती पूर्ण होने के पश्चात्, आरती की थाली को नीचे रखकर पानी उतारकर सब पर छींटा लगावें और देवताओं के बाद सबको आरती दें। बिना रुपये चढ़ाये आरती नहीं ली जाती है। इसके बाद ब्राह्मण, कन्या और घर के मुखिया के टीका लगावें कलावा (मौली) पुरूषों के सीधे हाथ में तथा स्त्रियों के उल्टे हाथ में बाँधें। इसके पश्चात् सभी लोग जयकारा बोलें। ''**गणेश जी महाराज की जय, लक्ष्मी माता की जय, गौ माता की जय।**'' दोनों हाथ ऊपर उठाकर बोलें ''**हर-हर महादेव**'' जमीन पर लेटकर प्रणाम करें। आसन के नीचे जरा-सा पानी डालकर माथे से लगावें। सब लोग अपने हाथों में फूल चावल लेकर निम्न मंत्र उच्चारण करके चढ़ावें।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मयादेव पूरिपूर्ण तदस्तु मे।।

पूजन से उठने के बाद हर व्यक्ति अपने से बड़ो के पैर छुए तभी पूजा का पूर्णफल प्राप्त होगा। दूसरे दिनं अथवा भाई दौज के दिन चढ़ाया हुआ सभी सामान अपने पुरोहित जी के यहाँ पहुचावें।

उपरोक्त विधि से किया गया पूजन अद्भुत और तुरन्त प्रभाव देने वाला हैं। यदि शुद्ध आचरण और मनोकामनों से इन उपायों को जो कोई भी करता हैं एवं रोजाना यंत्रों पर चमेली का इत्र लगायें इस प्रकार पूजा करने से उस पर गणेश जी एवं माँ लक्ष्मी जी वर्ष पर्यन्त असीम कृपा बनी रहती है। ?

एक चीज का अवश्य ध्यान रखें, श्री महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करनें के पश्चात् रोजाना पक्षियों को दाना अवश्य डालें। ❋❋❋

दीपावली पूजन का समय सन् 2011

दीपावली 26-10-2011 **बुधवार के दिन प्रातः 7:53 से 10:38 तक (उत्तम)। दोपहर** 1:32 **से** 4:28 **बजे तक। सांय** 6:04 **से 8:00 बजे तक। सांय** 8:46 **से रात्रि** 10:14 **तक (उत्तम) । रात्रि** 12:37 **से रात्रि** 01:38 **तक (उत्तम) जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी।**

दक्षिणा वर्ती शंख पूजन से दूर होती है दरिद्रता

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

पौराणिक प्रसंगों के अनुसार एक बार भगवान् विष्णु ने लक्ष्मीजी से यह पूछा कि आपका निवास कहाँ–कहाँ होता है? उत्तर में लक्ष्मीजी ने कहा **'वसामि पघोत्पल शंख मध्ये, वसामि चन्द्रे च महेश्वरे च'** अर्थात् मैं लाल कमल, नील कमल, शंख, चन्द्रमा, और शिवजी में निवास करती हूँ। इसलिए शंख को लक्ष्मीप्रिया, लक्ष्मी भ्राता, लक्ष्मी सहोदर आदि नामों से जाना जाता है। पौराणिक कथानकों के अनुसार समुद्र मंथन के समय चौदह प्रकार के रत्नों की उत्पत्ति हुई थी, उनमें से एक रत्न शंख भी था। चूँकि लक्ष्मी भी समुद्र मंथन से उत्पन्न हुई थी, अतः समुद्र से उत्पन्न होने के कारण ये दोनों भाई–बहिन हैं। पौराणिक उल्लेखों में शंख को देवता का दर्जा दिया गया है। अर्थवेद में इसे शत्रुओं को परास्त करने वाला, पापों से रक्षा करने वाला, राक्षसों और पिशाचों को वशीभूत करने वाला, रोग और दरिद्रता को दूर करने वाला, दीर्घायु प्रदान करने वाला तथा आधि व्याधि से रक्षा करने वाला वताया गया है। शंख के इस महत्व तथा लक्ष्मी का निवास स्थल होने के कारण जिस घर में शंख स्थित होता है, वहाँ लक्ष्मी जी का निवास अवश्य होता है।

दायीं ओर की भँवर वाला शंख दक्षिणावर्ती कहलाता है। दक्षिणावर्ती शंख का आध्यात्मिक महत्व होने के कारण वह बहुत ही शुभ, श्री एंव समृद्धिदायक और वैभवकारी होता है। यह शंख गेहूँ के दाने से लेकर एक जटा युक्त नारियल के आकार तक हो सकता है, दुर्लभ होने के कारण यह वामावर्ती शंख से महँगा होता है।

प्रायः सभी दक्षिणावर्ती शंख मुख बन्द किए होते है। यह शंख बजाए नहीं जाते हैं, केवल पूजा रूप में ही काम में लिए जाते है। शास्त्रो में दक्षिणावर्ती शंख के कई लाभ बताए गए हैं। जिनमें से मुख्यरूप से निम्नलिखित लाभ है।

राज सम्मान की प्राप्ति, लक्ष्मी वृद्धि, यश और कीर्ति वृद्धि, संतान वृद्धि, बाँझपन से मुक्ति, आयु की वृद्धि, राज्य से लाभ, शाकिनी, भूत, बेताल, पिशाच, ब्रहाराक्षस आदि से मुक्ति, आकस्मिक मृत्यु के भय से मुक्ति, शत्रु भय से मुक्ति, अग्नि भय से मुक्ति, चोर भय से मुक्ति, सर्प भय से मुक्ति, दरिद्रता से मुक्ति,

दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर उसे जिसके ऊपर छिड़क दिया जाए, वह व्यक्ति तथा वस्तु पवित्र हो जाती है।

ऐसे व्यक्ति के दुर्भाग्य, अभिचार, अभिशाप और दुर्ग्रह के प्रभाव समाप्त हो जाते है। साथ ही जादू–टोना, रोग, नजर जैसे अभिचार कृत्य भी इस जल के स्पर्श से शान्त हो जाते है। दक्षिणावर्ती शंख जहाँ भी रहता है, दरिद्रता वहाँ से पलायन कर जाती है। इस प्रकार निर्धनता निवारण के लिए यह सर्वश्रेष्ठ तंत्रोक्त वस्तु है।

चूँकि लक्ष्मी साधना का सर्वोत्कृष्ट दिन दीपावली नजदीक ही है, अतः इस दिन दक्षिणावर्ती शंख को अपने घर में स्थापित कर पूजार्चन करके उपयुक्त सभी लाभों को प्राप्त किया जा सकता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि दक्षिणावर्ती शंख से उपयुक्त फलों के साथ साथ सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। उक्त फलों की प्राप्ति एंव मनोकामना की पूर्ति के लिए दीपावली पर दक्षिणावर्ती शंख का पूजन विधि संक्षेप में निम्नलिखित हैः

प्रारंभिक कार्य :– घर के एकांत कक्ष में पश्चिम दिशा में दीवार के सहारे एक चौकी बिछाएँ और उस पर लाल वस्त्र बिछाएँ। अब उस लाल वस्त्र पर रोली और हल्दी से रंगे हुए चावलों से आसन (संभव हो, तो अष्टदल, नहीं तो सामान्य वर्गाकार या वृताकार बना लें।

स्नान :– अब दक्षिणावर्ती शंख को पंचामृत एंव गंगाजल से स्नान कराएँ। इसके उपरान्त लाल चन्दन से दक्षिणावर्ती शंख पर श्री अंकित करें। तदुपरान्त शंख को चौकी पर बनाए गए आसन पर स्थापित कर दें।

ध्यान :– अब निम्न प्रकार से दक्षिणावर्ती शंख का ध्यान करें।

सर्वविध आभरणों से भूषित, उत्तमोत्तम अंग और उपांगों से युक्त, कल्पवृक्ष के नीचे स्थित कामधेनु, चिंतामणि और नवनिधि स्वरूप, चौदह रत्नों से परिवृत्त, आठ महासिद्धियों से संयुक्त, माता लक्ष्मी के

शेष पेज 20 **पर**.....

09717195756

❋ ❋ ❋

समृद्धिदायक महालक्ष्मी का पूजन एवं उन्हें प्रसन्न करने के उपाय

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

देवी महालक्ष्मी सम्पूर्ण ऐश्वर्य चल–अचल, सपंत्ति धन, यश, कीर्ति एवम् सकल सुख वैभव को देने वाली साक्षात जगत माता नारायणी है। श्री गणेश जी समस्त विघ्नों के नाशक, अमंगलों के हरण कर्त्ता सद्विद्या एवम् बुद्धि के दाता है। दीपावली के दिन इनकी सयुंक्त पूजा अर्चना करने से कुटुम्ब परिवार में धन सम्पत्ति का सुख चिरकाल तक बना रहता है।

महालक्ष्मी के पूजन में कुछ दुर्लभ वस्तुओं जैसे श्रीयन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र, एकमुखी रुद्राक्ष, दक्षिणावर्त्ती शंख, गोमती चक्र, कौड़िया, हत्था जौड़ी, एकांक्षी नारियल, कमलगट्टे की माला, लक्ष्मी यन्त्र इत्यादि का प्रयोग होता है। इसके दुर्लभ प्रभाव से लक्ष्मी का वास सदैव के लिये आपके पास हो जाता है। परन्तु इनका प्रयोग शुभ मुर्हूत पूर्ण विधि विधान से करना चाहिये तभी आपको वर्ष भर इनका शुभ फल प्राप्त होता रहेगा।

1. पारद लक्ष्मी गणेश– दीपावली के दिन शुभ मुर्हूत में एक चौकी पर लाल वस्त्र विछा कर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर पारद लक्ष्मी–गणेश की स्थापना करने से सम्पूर्ण विघ्न बाधाओं का निराकरण होता है। व्यापार एवम् नौकरी में अच्छी तरक्की होती है।

2. कुबेर यन्त्र– धनतेरस के दिन कुबेर यन्त्र की स्थापना करने व विधिवत धूप, दीप, पुष्प, अक्षत, नैवद्य इत्यादि से पूजन करने से अक्षय धन कोष की प्राप्ति होती है। नवीन आय के स्त्रोत बनते है। व्यवसाय में वृद्धि होती है।

3. गोमती चक्र एवम् कौड़ी– दीपावली के मुर्हूत में गोमती चक्र व कौड़ी जो कि लक्ष्मी जी को अत्यन्त प्रिय हैं उन्हें गंगाजल एवम् पंचाभूत से शुद्ध करके पूजन स्थल पर रखें इसके प्रभाव से धन का त्वरित आगमन एवम् बरकत बनी रहेगी।

4. कमलगट्ठे की माला– यह माला लक्ष्मी के सर्वाधिक प्रिय कमल पुष्प के बीजों से बनायी जाती है। इस माला से लक्ष्मी मन्त्रों का जप करने से साधक को शीघ्र मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

5. सर्वकार्य श्री यन्त्र– यंत्र राज श्री यन्त्र की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। तथा यदि यही यन्त्र स्फटिक पर बना होता है। उसकी महिमा में और चार चांद लग जाते है। इसके दर्शन करने मात्र से ही मनुष्य धन्य हो जाता है। दीपावली के शुभ मूहूर्त में इसका पूजन धन के साथ–साथ यश कीर्ति भी बढ़ाता है।

6. एकांक्षी नारियल– एंकाक्षी नारियल को दीपावली के शुभ मूर्हूत में भक्ति भाव से मौली बांधकर गंध, अक्षत, इत्र से पूजन कर लक्ष्मी जी को चढ़ाये इससे लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती है। धन धान्य के द्वार खोलती है।

7. महालक्ष्मी यन्त्र– महालक्ष्मी यन्त्र की विधिवत पूजा करने से भगवती लक्ष्मी की कृपा से अप्राप्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा प्राप्त लक्ष्मी निरकार तक बनी रहती है। इस पर इत्र, रोली अक्षत चढ़ाये व कमल गट्टे की माला से लक्ष्मी जी के लघु बीज यंत्र का जाप करें।

''ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मै नमः।''

8. कनक धारा यन्त्र– इस यन्त्र का दीपावली पर पूजन करके घर में रखन से घर में धन एवमं स्वर्ण, रजत, आभूषणों की वृद्धि निरन्तर होती रहती है। कनक का अर्थ स्वर्ण से तथा गेंहूं होता है। अतः दीपावली के शुभ मुर्हूत में पीले वस्त्र पर चावल श्रीं बनाकर उसपर इस यन्त्र को स्थापित कर हल्दी की माला से मन्त्र जाप करें।

9. उल्लू यंत्र– तंत्र शास्त्र में उल्लू का बड़ा महत्व है। उल्लू लक्ष्मी का वाहन माना जाता है। यह सामने वाले को वशीकरण करने में भी काम आता है। इसकी पूजा दीपावली पर करने से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति निश्चित है। इसको स्थापित करने के बाद रोजाना पक्षियों को दाना डालना अनिवार्य है।

10. हत्था जोड़ी– यह अति दुर्लभ है यह रक्षा करती है इससे लक्ष्य की प्राप्ति शीघ्र अति शीघ्र होती है।

11. बिल्ली की जेर– यह अत्यन्त प्रभावशाली होती है लक्ष्मी प्राप्ति के लिये इसकी पूजा करके इसे तिजोरी में स्थापित किया जाता है।

12. एक मुखी रुद्राक्ष– यह भी दीपावली पर पूजन स्थल पर रखने से घर में किसी भी प्रकार की अनहोनी होने की सम्भावना नही रहती है। यह रक्त चाप उदर विकार आदि से निदान कराता है। वहीं दूसरी ओर भूत प्रेत बाधा से भी मुक्ति देता है। ❋❋❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

मनोकामनाओं की पूर्ति में साहयक है गोमती चक्र

पुष्पित पारासर
ज्योतिष ऋषि, वास्तु ऋषि, अंक विशारद

लक्ष्मी–साधक गोमती चक्र से भली–भाँति परिचित हैं। गोमती चक्र समुद्र प्रदत्त दुर्लभ एंव चामत्कारिक तंत्रोक्त वस्तु है गोमती चक्र के प्रयोग अन्य तंत्रोक्त साधनाओं एंव प्रयोगों की भाँति कठिन अथवा दुष्कर नहीं हैं। बड़े ही सरल, किन्तु प्रभावकारी प्रयोग गोमतीचक्र के होते है। पाठको के हित के लिए दीपावली एंव अन्य शुभ मुहूर्तो में किए जा सकने वाले लाभकारी गोमतीचक्र–प्रयोगों में सें कुछ प्रयोगों का वर्णन प्रस्तुत लेख में किया गया है।

1. दीपवाली के दिन ग्यारह गोमतीचक्रों को लक्ष्मीपूजन में प्रयुक्त जल से सिक्त करें और यमद्वितीया के दिन दोपहर 11:48 से 12:12 के मध्य उन पर सिन्दूर लगाएँ। उसके बाद उन्हें लाल कपडे में बाँधकर अपनी दुकान, शोरूम, ऑफिस, फैक्टी अथवा व्यवसाय स्थल के मुख्य द्वार की चौखट अथवा मुख्यद्वार के निकट अन्य गुप्त स्थान पर बाँध दें। ऐसा करने से व्यापार में अपूर्व वृद्धि होती है।

2. दीपवाली के दिन महालक्ष्मी पूजन के समय आठ गोमतीचक्र, आठ कौड़ी एंव आठ लाल गुंजा साथ लेकर उनका पुजन करें। उन्हें दक्षिणावर्ती शंख में थोड़े से चावल डालकर स्थापित कर दें। रात्रि में ही उन्हें लाल कपडे में बाँधकर धर अथवा व्यवसाय स्थल की तिजौरी में स्थापित कर दें। यह प्रयोग आपकी आय में वृद्धि के लिए है।

3. शत्रुओं से परेशानी का अनुभव कर रहें हों, तो दीपावली की रात्रि में बारह बजे के पश्चात् छह गोमती चक्र लेकर शत्रु का नाम लेते हुए उस पर लाल सिन्दूर लगाएँ और किसी एकांत स्थान पर जाकर गाड़ दें। गाडना ऐसे चाहिए कि वे पुनः निकालें नहीं। ऐसा करने से शत्रु बाधा में शीघ्र ही कमी होगी।

4. महानिशा में माँ लक्ष्मी का ध्यान करते हुए एक गोमती चक्र एंव दो कौडी एक लाल कपड़े में बाँधकर गर्भवती महिला की कमर में बाँध दें। ऐसा करने से गर्भ गिरने की आशंका नहीं रहती है।

5. यदि आप गृह क्लेश से पीडित है और आपकी सुख शांति दूर हो गई है, तो आपको दीपावली के दिन महालक्ष्मी पूजन के पश्चात दो गोमती चक्र लेकर एक डिब्बी में पहले सिन्दूर रखकर उसके ऊपर रख देना चाहिए और उस डिब्बी को किसी एकांत स्थान पर रख दें। यह प्रयोग घर में किसी अन्य सदस्य को भी नहीं बताएँ, ऐसा करने से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

6. यदि बीमार ठीक नहीं हो पा रहा हो अथवा दवाइयाँ नही लग रही हों, तो उसके सिरहाने पाँच गोमती चक्र मंत्र से अभिमंत्रित करके रखें। ऐसा करने से रोगी को शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ होगा।

7. गोमती चक्र को लाल वस्त्र में बाँधकर यदि दूकान की चौखट पर बाँध दिया जाए, तो इससे व्यवसाय में वृद्धि होती हैं। साथ ही व्यवसाय में बाधा के लिए किए गए अभिचार कर्म भी सफल नहीं हो पाते।

8. यदि गोमती चक्र को लकड़ी की डिब्बी में पीले सिंदूर के साथ रख दिया जाए, तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में सफलता मिलने लगती है। यदि धनागम के सभी मार्ग अवरूद्ध हो रहे हों तों वह प्रयोग करने से शीघ्र ही धन लाभ प्रराम्भ हो जाता है।

9. यदि किसी व्यक्ति से कोई कार्य सिद्ध करवाना हो, तो उस व्यक्ति के ऊपर से गोमती चक्र पाँच बार बहते हुए जल में डाल दें।

10. यदि किसी व्यक्ति का मन उखडा–उखडा रहता हो, किसी काम में मन नही लगता हो, विधार्थियों को शिक्षा में एकाग्रता न मिल रही हो, तो गोमती चक्र को सात बार अपने सिर पर फिराकर खुद ही अपने पीछें फेंक देना चाहिए। यह प्रयोग एकांत स्थान पर करना चाहिए तथा प्रयोग के बाद किसी से इनका जिक्र नहीं करना चाहिए।

11. यदि किसी व्यक्ति को दिया हुआ धन वापस नही मिल रहा हो, तो उस व्यक्ति का नाम लेकर मन ही मन धनप्राप्ति की कामना करते हुए गोमतीचक्र को एक हाथ गहरी भूमि खोदकर एकांत स्थान में गाड़ दें। इस प्रयोग से धन वापस मिल जाता है।

❋❋❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

महापर्व दीपावली

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

"दीपावली पर्व हिन्दू धर्म के लिए महापर्व है। परन्तु इस पर्व की महिमा जितनी कही जाय कम है। मान्यताओं के अनुसर यह पंचपर्व माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतू सर्वोत्तम है। इस पर्व पर लोग विशेष प्रकार की पूजा व अनुष्ठान करते हैं, लक्ष्मी जी को पाने के लिए । किन्तु कम ही लोग जानते हैं कि धनतेरस का क्या रहस्या है? व कैसे धनतेरस पर लक्ष्मी जी की प्रसन्न करना है?"

इस बार 24 अक्टूबर 2011 को धनतेरस का पर्व मनाया जायेगा। कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को धन्वन्तरि जयंती और धनतेरस दोनों ही मनाने का विद्यान हैं। यह दीपावली के आने की शुभ सूचना है। कहतें है कि इस दिन धन्वन्तरि वैद्य समुद्र से अमृत कलश लेकर आये थे। इसलिए धनतेरस को "धन्वन्तरि जयन्ती" भी कहते हैं। इस दिन घर के टूटे–फूटे पुराने बर्तनों के बदले नये बर्तन खरीदतें हैं। इस दिन चाँदी के बर्तन खरीदना अत्याधिक शुभ माना जाता है। इस दिन धन का अपव्यय नहीं किया जाता। तथा किसी को उधार भी नहीं दिया जाता। इसलिए कुछ लोग व्यापार में लेन–देन से भी बचते हैं। इस दिन वैदिक देवता यमराज का भी पूजन किया जाता है। यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के द्वार पर रखा जाता है। रात को स्त्रियां दीपक में तेल डालकर चार बत्तियां जलाती है। जल, रोली, चावल, गुड़ और फूल आदि नैवेद्य सहित दीपक जलाकर यम का पूजन करती हैं।

कथा– एक बार भगवान विष्णु लक्ष्मी जी सहित पृथ्वी पर घूमने आये। कुछ देर बाद भगवान लक्ष्मी जी से बोले–मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूँ। तुम यहीं ठहरों, परन्तु लक्ष्मीजी भी विष्णु जी के पीछे चल दीं। कुछ दूर चले पर ईख का खेत मिला। लक्ष्मी जी एक गन्ना तोड़कर चूसने लगीं। भगवान लौटे तो उन्होने लक्ष्मीजी को गन्ना चूसते पाया। इस पर क्रोधित होकर उन्होंने श्राप दे दिया कि तुम जिस किसान का यह खेत है उसके यहाँ पर 12 वर्ष तक उसकी सेवा करो। विष्णु भगवान क्षीर सागर लौट गए तथा लक्ष्मी जी किसान के यहाँ रहकर उसे धन–धान्य से पूर्ण कर दिया। बारह वर्ष पश्चात लक्ष्मी जी भगवान विष्णु के पास जाने के लिए तैयार हो गई परन्तु किसान ने उन्हें रोक लिया। तब विष्णु भगवान बोले–तुम परिवार सहित गंगा स्नान करने जाओं और इन कौड़ियों को भी गंगाजल में छोड़ देना तब तक में यहीं रहूँगा। किसान ने ऐसा ही किया। गंगाजी में कौड़ियाँ डालते ही चार चतुर्भुज निकले और कौड़ियाँ लेकर चलने को उद्यत हुए। ऐसा आश्चर्य देखकर किसान ने गंगाजी से पूछा–ये चार हाथ किसके हैं। गंगाजी ने किसान को बताया ये चारों हाथ मेरे थे। तुमने जो कौड़ियाँ मुझे भेट की हैं वे तुम्हे किसने दी है? किसान बोला–मेरे घर में एक स्त्री–पुरुष आये हैं। वे लक्ष्मी जी और विष्णु भगवान हैं। तुम लक्ष्मी जी कोमत जाने देना, नहीं तो पुनः निर्धन हो जाओंगे। किसान ने घर लौटने पर लक्ष्मी जी को नहीं जानें दिया तब भगवान ने किसान को समझाया कि मेरे श्राप के कारण लक्ष्मीजी तुम्हारे यहाँ बारह वर्ष से तुम्हारी सेवा कर रहीं हैं। फिर लक्ष्मी जी चंचल हैं, इन्हें बड़े–बड़े नहीं रोक सके, तुम हठ मत करो। फिर लक्ष्मीजी बोली– हे किसान! यदि तुम तुम मुझे रोकना चाहते हो तो कल धनतेरस है। तुम अपना घर स्वच्छ रखना। रात्रि में घी का दीपक जलाकर रखना। मैं तुम्हारे घर आऊँगी तुम उस वक्त मेरी पूजा करना परन्तु मैं अदृश्य रहूँगी। किसान ने लक्ष्मीजी की बात मान ली। और लक्ष्मी जी द्वारा बताई विधि से पूजा की। उसका घर धन–धान्य से भर गया। इस प्रकार किसान प्रति वर्ष लक्ष्मी जी को पूजने लगा तथा अन्य लोग भी उनका पूजन करने लगे।

❋❋❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

दीपावली पर लक्ष्मी जी का पूजन गणेश जी के साथ क्यों?

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

भारत एक आध्यात्म और धर्म प्रधान देश है दीपावली भारत का अत्यन्त प्राचीन सांस्कृतिक पर्व है। इस दिन धन और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का प्रार्दुभाव हुआ था। लक्ष्मी भगवान विष्णू की पत्नी है फिर भी लक्ष्मी जी के साथ गणेश जी की पूजा क्यों होती है?

आइये जाने कि ऐसा क्यों होता है। यह सर्व विदित सत्य है कि कोई भी शुभ कार्य गणेश पूजन से ही प्रारम्भ होता है। गणेश जी बुद्धि प्रदाता है। वे विघ्न विनाशक और विघ्नेश्वर हैं। यदि व्यक्ति के पास धन सम्पदा है और बुद्धि का अभाव है तो वह उसका सदुपयोग नहीं कर पायेगा। अतः व्यक्ति का बुद्धिमान और विवेक होना भी आवश्यक है। तभी धन के महत्व को समझा जा सकता है। गणेश का विशाल उदर अधिक सम्पदा का प्रतीक है। और सूँढ कुशाग्र बुद्धि का प्रतीक है।

यह सर्वत्र मान्य है कि बिना गणेश जी की पूजा के किसी भी पूजा का कोई अभीष्ट फल प्राप्त नहीं होता। जिस प्रकार लक्ष्मी जी की पूजा से धन सम्पदा और ऐश्वर्य की प्राप्ति हो सकती है। उसी प्रकार गणेश जी की पूजा से बुद्धि वाक चार्तुय की प्राप्ति होती है। साथ ही संकटों का नाश होता है। पौराणिक ग्रन्थों में एक कथा में प्रमाण मिलता है कि लक्ष्मी जी पूजा गणेश जी के साथ क्यों होती है।

एक बार एक वैरागी साधु को राज सुख भोगने की लालसा हुई उसने लक्ष्मी जी की आराधना की। उसकी आराधना से लक्ष्मी जी प्रसन्न हुई तथा उसे साक्षात दर्शन देकर वरदान दिया कि उसे उच्च पद और सम्मान प्राप्त होगा। दूसरे दिन वह वैरागी साधु राज दरवार में पहुचा। वरदान मिलने से उसे अभिमान हो गया। उसने राजा को धक्का मारा जिससे राजा का मुकुट नीचे गिर गया। राजा व उसके दरबारीगण उसे मारने के लिए दौड़े। परन्तु इसी बीच राजा के गिरे हुए मुकुट से एक काला नाग निकल कर भागने लगा। सभी चौंक गये और साधु को चमत्कारी समझकर उस की जय जयकार करने लगे। राजा ने प्रसन्न होकर साधु को मंत्री बना दिया। क्योंकि उसी के कारण राजा की जान बची थी। साधु को रहने के लिए अलग से महल दिया गया वह शान से रहने लगा। राजा को एक दिन वह साधु भरे दरवार से हाथ खीचकर बाहर ले गया। यह देख दरबारी जन भी पीछे भागे। सभी के बाहर जाते ही भूकम्प आया और सभा भवन खण्डहर में तब्दील हो गया। उसी साधु ने सबकी जान बचाई। अतः साधु का मान सम्मान बढ़ गया। जिससे उसमें अहंकार की भावना विकसित हो गयी। राजा महल में एक गणेश जी प्रतिमा थी एक दिन साधु ने वह प्रतिमा यह कह कर वहाँ से हटवा दी कि यह प्रतिमा अच्छी नहीं है। साधु के इस कार्य से गणेश जी रुष्ठ हो गये। उसी दिन से उस मंत्री बने साधु की बुद्धि बिगड़ गई वह उल्टा पुल्टा करने लगा। राजा ने उससे नाराज होकर कारागार में डाल दिया। वह जेल में पुनः लक्ष्मीजी की आराधना करने लगा। लक्ष्मी जी ने दर्शन दे कर उससे कहा कि तुमने गणेश जी का अपमान किया है। अतः गणेश जी की आराधना करके उन्हें प्रसन्न करों। लक्ष्मीजी का आदेश पाकर वह गणेश जी की आराधना करने लगा। इससे गणेश जी का क्रोध शान्त हो गया। गणेश जी स्वप्न में राजा से कहा कि साधु को पुनः मंत्री बनाया जाये। राजा ने गणेश जी के आदेश का पालन किया और साधु को मंत्री पद देकर सुशोभित किया। इस प्रकार लक्ष्मीजी और गणेश जी की पूजा साथ–साथ होने लगी। बुद्धि के देवता गणेश जी की भी उपासना लक्ष्मीजी के साथ अवश्य करनी चाहिए क्योंकि यदि लक्ष्मीजी आ भी जाये तो बुद्धि के उपयोग के बिना उन्हें रोक पाना मुश्किल है।

इस प्रकार दीपावली की रात्रि में लक्ष्मीजी के साथ गणेशजी की भी आराधना की जाती है।

दीपावली पर पार्थिव पूजा का अपना विशिष्ट महत्व है। धर्मशास्त्रों में भी पार्थिव पूजन का विशेष महत्व वर्णित है। इस पार्थिव पूजन या मिट्टी की प्रतिमाओं के पीछे यह रहस्य छिपा है कि इससे अमीर और गरीब का अन्तर मिटता है। सभी में समभाव की भावना का विकास होता है। और यह शुद्ध व पवित्र भी मानी जाती है।

अतः दीपावली पर मिट्टी की प्रतिमा से ही लक्ष्मी जी व गणेश जी का विधिवत पूजन व अर्चन करना चाहिए जिससे धन सम्पदा ऐश्वर्य के साथ–साथ बुद्धि का भी विकास हो। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

शुभ दीपावली

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

दीपावली के दिन घनी काली अंधेरी रात होती हैं। काली अंधेरी रात या कोई भी अंधकार कश्ट का प्रतीक माना गया हैं क्योंकि अंधकार में मार्ग दिखाई नहीं देता, व्यक्ति रास्ता भटक जाता हैं। मन में जब तक दुखः का, गम का अंधेरा रहेगा तब तक व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं पा सकेगा। अंधेरे से उजाले की ओर आने की प्रक्रिया को ही अमावस्या शांति कहते हैं। जितनी अधिक काली अंधेरी रात होती हैं वह इस बात की प्रतीक हैं कि अब आगे जल्दी रोशनी पहर आने वाली हैं। जैसे–जैसे सुबह नजदीक आती हैं, अंधेरा और बढ़ता जाता हैं। जैसे–जैसे सुबह की किरण फूटने वाली होती हैं, व्यक्ति दुनिया की सुध–बुध भूलकर चैन से सोना चाहते हैं। सुबह का आना इस बात का प्रमाण हैं कि काई भी अंधेरा अधिक समय तक नहीं टिकता। अधिक गम, अधिक खुशी अधिक समय तक नहीं टिकती। अत्यधिक गम इस बात का संकेत हैं कि अब जल्दी ही खुशी मिलने वाली हैं, अत्यधिक नींद इस बात का संकेत हैं कि सपनों की दुनिया के आगे वास्तविक उपलब्धि हाथ से जाने वाली हैं। कहा भी गया हैं कि जो सोवत हैं वो खोवत हैं, जो जागत हैं वो पावत हैं अर्थात ब्रह्म मुहूर्त के बाद सोना जिंदगी में बहुत कुछ खो देने का संकेत कहा गया हैं।

दीपावली की अमावस्या के दिन लकड़ी की दो चौकी लें। जिस दिन दीपावली की अमावस्या पड़ें उस दिन उस समय अवधि से पहले सरसों के तेल का एक बड़ा दिया जला देवें और शनिदेव की तस्वीर, प्रतिमा या मंत्र के आगे तेल का दिया रखकर यह प्रार्थना करें कि हमारे घर में लक्ष्मी के आगमन में , सफलता में जो भी विघ्न– बाधा, परेशानी, रूकावट आ रही हैं वह दूर हो जाये और उस दिये को अखण्ड जलने दें। दूसरे दिन के दीपावली पूजन हो जाने तक उसे जलाना चाहिए। जब दीपावली पूजन का मुहूर्त हो उस समय लकड़ी की एक चौकी पर महालक्ष्मी माता की तस्वीर रखें और दूसरी चौकी पर शनि देव की तस्वीर, काला वस्त्र चौकी पर बिछाकर रखें। लक्ष्मी जी वाली चौकी पर रक्त लाल रंग का वस्त्र बिछायें। लक्ष्मी जी की हल्दी, कुमकुम, अश्टगंध, मिष्ठान, खिल–बताशे, पकवान व खीर–पूड़ी अर्पण कर विधिवत पूजन करें। उन्हें लाल पुष्प व लाल वस्त्र अर्पण करें। शनिदेव को काले अक्षत, नीले पुष्प से पूजन करके, उड़द व तील से बने पकवान उन्हें भोग में अर्पण करें। जब भोग लगायें तब जल भी साथ में रखें। एक–एक सूखा नारियल और एक–एक पानी वाला नारियल दोनों चौकी पर रखें। सामने बैठकर एक माला शनि महामंत्र की और एक माला महालक्ष्मी मंत्र की जाप करें। मंत्र जाप प्रत्यें सदस्य भी अपने–अपने उज्ज्वल भविश्य के लिए व जीवन में वैभव की प्राप्ति के लिए कर सकते हैं। जो मंत्र जाप करने हैं वे निम्न हैं : –

शनि महामंत्र

ऊँ नीलाजंन समाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि श्नैश्चरम्।।

महालक्ष्मी मंत्र

ऊँ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मये नमः।

इन दोनों मंत्रों के जाप के पूर्व अपने गुरू का व गणपति जी का मंत्र भी 11–11 बार पाठ कर लेवें। मंत्र पाठ के बाद आरती करें, कपूर जलायें। फिर जो भी प्रसाद शनिदेव के आगे रखा हैं और जो भी लक्ष्मी जी के आगे रखा हो वह सभी अलग–अलग कपड़े में बाँध ा दें। शनिदेव के काले वस्त्र की चौकी पर उड़द, तिल, गुड़ के जो भी पकवान उड़द, तिल, गुड़ के साथ रखे थे उन्हें काले कपड़े में बांध दें और लक्ष्मी जी वाला सारा सामान लाल कपड़े में बांध देवें मगर दोनों चौकी से पानी वाला नारियल अलग निकाल कर सामान को बांधना हैं। काले कपड़े वाला सामान किसी गरीब को या भिखारी को उसी रात्रि में दे दें साथ में एक भोजन का बड़ा पेकेट भी उसे भोजन करने के लिए देवें। लाल कपड़े वाला सामान किसी भी मंदिर के पुरोहित को दे दें। पानी वाले नारियल जो अलग निकाले थे दोनों अपने घर के दरवाजे पर यह कहकर फोड़े कि मेरी जिन्दगी में ध ान प्राप्ति में , सफलता प्राप्ति में जो भी बाधा आ रही हैं उसे दूर करने के लिए हम यह श्रीफल बलि दे रहे हैं। नारियल फोड़ने के बाद उसके दोनों टुकड़ों में श्क्कर में थोड़ा सा दो चममच घी मिलाकर भर देवें। श्क्कर से भरे यह नारियल अपने घर के अंदर या बाहर पीपल के बड़े पेड़ के नीचे ऐसी जगह पर अलग–अलग रखें जहाँ पर खूब चीटिंया लगनी चाहिए। इस प्रकार से शनिदेव का प्रकोप इस

शेष पेज 20 **पर**.....

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

स्थायी लक्ष्मी प्राप्ति हेतु अद्भुत टोटके

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

1. यह **लक्ष्मी वाहन उल्लू यंत्र है।** सिद्ध लक्ष्मी वाहन उल्लू यंत्र को दीपावली वाले दिन घर के पूजा कक्ष एवं दुकान के पूजा स्थल पर रखने एवं प्रतिदिन गुग्गुल धूपबत्ती दिखाने से आर्थिक स्थिति में अद्भुत लाभ की प्राप्ति होती है। इस यंत्र को पूजा स्थल में रखने के पश्चात् रोजाना पक्षियों को दाना डालना जरुरी हैं। प्रत्येक शुक्रवार को इस यंत्र पर इत्र अवश्य लगायें।

2. दीपावली को रात में पूजन के पश्चात् गोमती चक्र तिजोरी में स्थापित करने से वर्ष भर समृद्धि व खुशहाली बनी रहती है।

3. घर में धन वृद्धि के लिए श्रद्धा व विश्वास के साथ नरक चतुर्दशी के दिन लालचन्दन लाल गुलाब के पांच फूल और रोली लाल कपड़े में बाँधकर पूजा करें, उसके पश्चात् अपनी तिजोरी में रखें। इस दिन ऐसा करने से घर में धन रूकने लगता है।

4. नौकरी की इच्छा रखने वाले जातक को दीपावली की शाम चने की दाल लक्ष्मी पर छिडक देनी चाहिए। दाल को महालक्ष्मी के पूजन के बाद एकत्रित कर पीपल में विसर्जित कर दें।

5. धन तेरस के दिन हल्दी और चावल पीसकर उसके घोल से घर के प्रवेश द्वार पर ऊँ बना दें।

6. दीपावली को लक्ष्मी पूजन के बाद घर के सभी कमरों में शंख और डमरू बजाना चाहिए। इससे दरिद्रता घर से बाहर जाती है, लक्ष्मी घर में आती हैं।

7. दीपावली की रात्रि में थोड़ी साबुत फिटकरी लेकर उसे दुकान में घुमायें, फिर किसी भी चौराहे पर जाकर उसको उत्तर दिशा की तरफ फेंक दें, दुकान में ग्राहकी बढेगी तथा धन लाभ में वृद्धि होगी।

8. छोटी दीपावली की सुबह गजराज को गन्ने या कुछ मीठी वस्तु अपने हाथ से खिलाये तो आर्थिक लाभ होगा।

9. छोटी दीपावली को प्रातःकाल स्थान करने के बाद सबसे पहले लक्ष्मी विष्णु की प्रतिमा अथवा फोटो को कमलगटटे की माला और पीले पुष्प अर्पित करें, धन लाभ होगा।

10. दीपावली के पूजन से पहले आप किसी भी गरीब सुहागिन स्त्री को अपनी पत्नी के द्वारा सुहाग सामग्री अवश्य दिलवायें, साम्रगी में इत्र अवश्य होना चाहिए।

शेष पेज 22 **पर.....**

महालक्ष्मी पूजन के टोटके

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

दीपावली की हार्दिक बधाई। श्री लक्ष्मी जी संसार केन्द्र समस्त भौतिक दुःखों की स्वामिनी, धन सम्पदा की देवी और वैभव, सम्मान की अधिष्ठात्री हैं। उनकी कृपा हो जाये तो व्यक्ति संसार को वशीभूत कर सकता है। महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए दीपावली के शुभ मुर्हूत में कुछ टोटके ऐसे हैः जिन्हे करने से धन की प्राप्ति अवश्य होती है।

1. दीपावली के दिन प्रात गन्ने की जड़ को नमस्कार करके घर ले जायें। फिर रात्रि लक्ष्मी पूजन के साथ इसका भी पूजन करें। इससे धन सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

2. दीपावली के दि माँ लक्ष्मी के पूजन के समय इत्र की शीशी माँ लक्ष्मी पर चढ़ायें उसमें से एक फुलेल लेकर उन्हें अर्पित करें । फिर पूजन के बाद पुजार के रुप में उसी फुलेल को स्वयं लगा लें। इसके बाद नित्य रोज इत्र लगाकर रोजगार घर जाये रोजगार के क्षेत्र में वृद्धि होगी।

3. दीपावली के दिन रात्रि में कच्चा सूत ले आये शुद्ध केसर से रंग कर कार्यस्थल पर रखने से उन्नति होती है।

श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र

अपने पूर्वजों की याद में लोगों को खाना
शान्ति बनी रहती है।
ो के दिन तुलसी का पूजन करता है उसे
नहीं करना पड़ता है।
ा हाथ में एक सुपारी एवं ताँवे का सिक्का
ीचे रख आयें। शनिवार के दिन उसी पेड़
रखने से ग्राहक सदैव अनुकूल रहता है।
दोपहर के समय हल्दी की गाठों को पीले कपड़े में रख कर "ऊँ वक्रतुण्डाय ऊँ" का 108 बार जाप कर तिजौरी में स्थापित करें। इससे व्यापार वृद्धि होती है।

8. दीपावली के दिन अर्ध रात्रि में काले उड़द के 108 दानों को "ऊँ नमः भैरवायः मन्त्र से अभिमन्त्रित करने से शत्रु भय समाप्त होता है।

9. दीपावली के दिन अपने मुख्य द्वार पर सरसों का तेल का दीपाक जलायें। फिर उसमें काली गुंजा के दो–चार दाने डाले दें इससे घर में सुख शान्ति आती है।

10. श्यामा तुलसी के चारों ओर उगने वाली घास को पीले कपड़े में बाँधकर दीपावली के दिन अपने कार्यस्थल पर रखने से उन्नति होती है।

11. एक चौकी पर वस्त्र बिछाकर उस पर पारद लक्ष्मी जी स्थापित करें। फिर 7 कौड़ियाँ को लक्ष्मी जी के ऊपर से उतारते हुये उनके निम्र मन्त्र का जाप करें।

ऊँ श्री ह्री महालक्ष्मी मम ग्रह आगच्छ स्थिर फट्।

फिर यह कौड़िया अपनी तिजोरी में स्थापित करें। ❋❋❋

कैसे करे इस दीपावली पर महालक्ष्मी को प्रसन्न

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक लक्ष्मी का स्वरुप अत्यन्त व्यापक रहने के कारण ज्योति पर्व दीपावली को भारतीय त्योहारों की आत्मा कहा गया है। ऋग्वेद की ऋचाओं में श्री अर्थात महालक्ष्मी का वर्णन समृद्धि व सौन्दर्य के रुप में अनेक बार हुआ है, अर्थववेद में भी ऋषि–मुनि श्री की प्रार्थना करते हुये कहते है कि "श्रिया मां धेहि" अर्थात मुझे श्री की प्राप्ति हो। वैदिक पुरुष सूक्त से लेकर अनेक पुराणों में भी लक्ष्मी को ऐश्वर्य शक्ति के रुप में स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण में तो लक्ष्मी की अभिव्यक्ति श्री रुप और लक्ष्मी रुप में की गई है और ये दोनों ही रुप श्री हरिविष्णु की पत्नियाँ हैं श्री देवी को कही–कही भूदेवी भी माना गया है। अतुल सम्पत्ति की अधिष्ठात्री श्री देवी शुद्ध सत्वमयी है। यह स्वर्ग में स्वर्ग लक्ष्मी के रुप में राजाओं के पास राजलक्ष्मी के रुप में मनुष्यों के पास गृहलक्ष्मी के रुप में और व्यापारियों के पास वाणिज्य लक्ष्मी के रुप में स्थित रहती है।

महालक्ष्मी की प्रसन्नता तो सभी के अभीष्ट है हर व्यक्ति धन वैभव सुख समृद्धि पाना चाहता है और इन सब को प्राप्त करने के लिये धन की देवी प्रसन्न करने के लिये दीपावली का उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। दीपावली के दिन महालक्ष्मी साधना से सम्बन्धित कुछ सरल प्रयोग जिन्हे करने से निश्चय ही दरिद्रता, विपन्नता व ऋण जैसी समस्याओं से मुक्ति पाकर महालक्ष्मी कि कृपा के पात्र बन सकते है–

1. दीपावली से पूर्व धन तेरस के दिन भवन के बाहर निकलते समय यदि हाथी अथवा नीलकण्ठ का दर्शन हो जाये तो हाथ जोड़कर उनसे लक्ष्मी प्राप्ति का कामना करें जिससे आपका मनोरथ सफल होगा नीलकण्ठ व हाथी का दर्शन इस दिन लक्ष्मी प्राप्ति का शुभ संकेत माना जाता है।

2. दीपावली के दिन सन्ध्या काल में मुख्यद्वार को स्वच्छ जल से धोकर उसके हैंडल पर किसी कन्या या स्त्री से लाल रिबन बँधवाये, हल्दी व चावल पीसकर एक ओर ऊँ और दूसरी ओर स्वास्तिक बनायें जिससे वर्ष पर्यन्त भवन में सुख समृद्धि बनी रहें।

3. सर्वप्रथम पूजनीय, बुद्धिदायक गणपति की प्रतिमा का विधिविधान से पंचोपचार पूजन करें दीपावली जैसे शुभ अवसर पर गणपति को एक सौ आठ दूर्बा अवश्य अर्पण करें। तंत्र और अध्यात्म में दूर्वा की अत्यन्त महिमा बताई है, दूर्वा तंत्र को कार्यसिद्धि की अद्भुत कुंजी बताया गया है। इस प्रकार गणपति की कृपा के साथ–साथ द्रव्योपार्जन की बाधा भी दूर होकर मनोकामना पूर्ति होती है और कर्ज से भी मुक्ति मिलेगी।

4. आर्क के वृक्ष को चमत्कारी व पूज्य माना है भगवान गणेश को आर्क पुष्प अत्यन्त प्रिय है आर्क वृक्ष की जड़ का छोटा भाग श्रद्धा व विश्वास से लाकर उस पर लाल धागा बाँधकर पूजा स्थल में अथवा कार्यालय में रखें जिससे व्यापार बाधा समाप्त होकर चमत्कारिक लाभ प्राप्त होगा।

5. दीपावली के दिन धन लाभ व सुख समृद्धि के लिये स्वर्ण की अगुँठी पहनकर कुमकुम और केसर से धन लक्ष्मी और गणपति को तिलक लगाकर स्वयं भी लगायें गणपति को लड्डू व लक्ष्मी जी को अन्य नैवेद्य के साथ अनार के दानों का भी भोग अवश्य लगायें।

6. दीपावली के दिन शुभ मुहूर्त में पूजन के समय परिवार की सुख समृद्धि व धन बुद्धि के लिये सबसे छोटे नोट की पूजा करे के बाद उसकी पिरामिड़ आकृति बनाकर अपनी तिजोरी में रखें।

7. दीपावली जैसे शुभ मुहूर्त में तिजोरी अथवा गल्ले में रखने में लिये भोजपत्र पर केसर, रोली अथवा शहद से श्री लिखे और उसे लाल कपड़े में बाँधकर गल्ले में या तिजोरी में रख ले फिर

शेष पेज 22 **पर**.....

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

धनत्रयोदशी धन्वन्तरी जयंती

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष प्रभाकर
मो. 9837966404

समुद्र मंथन से पृथ्वी पर धन्वन्तरी का प्रादुर्भाव कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हुआ था। इसलिए प्रतिवर्ष त्रयोदशी को धन्वन्तरी की पूजा अर्चना की जाती है। धन्वन्तरी त्रयोदशी का अभ्रंश होकर के धन त्रयोदशी हो गया इसलिए इस दिन धनदाता कुबेर भगवान की भी पूजा की जाती है। वर्ष 2011 में यह पर्व 24 अक्टूबर, सोमवार को मनाया जायेगा यह धन्वन्तरी जंयती तथा धन त्रयोदशी दोनो ही रूप में मनाते है। इस दिन घर में नई वस्तुएं खरीदकर लाने विधान है। खासकर बर्तन, स्वर्ण, रजत आदि खरीदे जाती है। धन त्रयोदशी के दिन धन का दुरोपयोग न करके हम वस्तुओं में संचित करके लाभ की कामना करते है। इस दिन प्रदोष काल में आयुर्वेद प्रवर्त्तक धन्वन्तरी व यम हेतु दीपदान किये जाते है तथा परिवार के स्वास्थ्य लाभ हेतु कामना की जाती है। जिससे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है।

धन्वन्तरी का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब सुर जौर असुरों में भयंकर युद्ध हुआ करते थे। असुर अधिक शक्तिशाली होने के कारण सुरों को हानि पहुँचाया करते थे। सुरों ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की हमारी असुरों से रक्षा करें तो भगवान विष्णु ने कहा कि समय पड़ने पर शत्रुओं को भी मित्र बना लेना चाहिए ऐसी स्थिती में तुम असुरों से संधि करके समुद्र मंथन करो जो समुद्र मंथन से दिव्य वस्तुएँ प्राप्त होगीं उनसे सुरों की रक्षा होगी। सुरों के प्रस्ताव को असुरों ने मान लिया। समुद्र मंथन से 14 दिव्य वस्तुओं का प्रादुर्भाव हुआ जिनमें से 10 वीं बार मंथन करने पर अमृत कलश लिए स्वयं धन्वन्तरी अवतरित हुए धन्वन्तरी का समुद्र से प्रादुर्भाव होने के कारण भगवान स्वरूप सम्मान दिया जाता है। आघदेव ध न्वन्तरी को भगवान विषणु का अवतार भी कहा जाता है। ये आघ वैध है। धन्वन्तरी युद्ध में क्षित–विक्षित सुरों को अपनी चिकित्सा से स्वरूप करते थे। इन्होने शल्य तंत्र अर्थात सर्जरी का प्रारम्भ किया तथा कृत्रिम अंग लगाने का वर्णन भी प्राचीन ग्रर्थो में मिलता है। ग्रन्थों के अनुसार धन्वन्तरी पृथ्वी पर बार–बार जन्म लेते रहे है। जिससे पृथ्वी लोक का कल्याण हुआ है। द्वापर युग में पुनः अवतरण की कथा हरिवंश पुराण में मिलती है। देवताओं को प्रौणअवस्था, रोग और मृत्यु से सुरक्षा प्रदान करने के लिए में धन्वन्तरी के रूप में जन्म लेता हूँ ऐसा भगवान विष्णु ने स्वंय कहा है। अष्ट बर्गो में शल्यतंत्र, कार्य चिकित्सा, भूतविधा और कौमार भृत्य, अगदतंत्र, रसायन तंत्र, वाजीकरण तंत्र, इनके साथ ही धन्वन्तरी ने नरायुर्वेद, गवायुर्वेद और अश्वायुर्वेद, वृक्षायुर्वेद की भी रचना की आयुर्वेद में पशु–पक्षियों की चिकित्सा धन्वन्तरी ने ही प्रारम्भ की। धनत्रयोदशी को दीपदान करते हुए परिवार की सुरक्षा के लिए भगवान आद्यवैध जी की प्रार्थना करें। ❋❋❋

लक्ष्मी प्राप्ति के उपयोगी यंत्र

पं. देव स्वरुप शास्त्री
ज्योतिष शास्त्राचार्य, वास्तु शास्त्राचार्य
Ph: 9219634387

आज के समय की यह सबसे बड़ी जरूरत हैं। जी हाँ, हम बात कर रहे है। आर्थिक समृद्धिं की धन दौलत आज व्यक्ति की सबसे बडी जरूरत है, आज वैसा समय नही रहा जैसे पहले लोग दाल रोटी खा कर प्रभु के गुण गाते थे। लेकिन आजकल बच्चा हो या बूढ़ा सभी की जरूरतें असीमित है। सभी चाहते है। कि उनका जीवन आज की जीवन शैली के अनुरूप भोग विलासिता से पूर्ण हो। आज समाज में धन का विशेष महत्व है लोग अपने पूर्व जन्म के शुभ कर्मो द्वारा धन तो कमा लेते है। किन्तु उसको स्थिर रखना अत्यन्त कठिन है। धन आता जिस गति से है। उससे भी अधिक गति से जाता है। आता हुआ धन दिखाई देता है। लेकिन जाता हुआ धन दिखाई नहीं देता। लक्ष्मी चंचल होती इसीलिए लक्ष्मी प्राप्ति के लिये कुछ उपयोगी यंत्र भी नीचे दिये हुये है।

स्फटिक श्री यंत्र – इस यंत्र को सभी यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। इस यंत्र को सुख समृद्धि तथा धन प्राप्ति के लिए मंदिर या तिजोरी में रख सकते है। श्री सूक्त से श्री यंत्र की पूजा करनी चाहिए

पूजा की विधि – सर्वप्रथम श्री यंत्र को चावलों से बनें अष्ट दल पर रखें और उसमें लक्ष्मी जी का ध्यान करे। श्री यंत्र पर चावल छोड़े और लक्ष्मी जी का आवाहन श्री यंत्र में करें और पाघ समर्पयामी, अर्घ्य समर्पयामी, आचमन समर्पयामी और स्नान समर्पण भी कहकर चार बार जल छोड़े तीन बार पृथ्वी पर और एक बार श्री यंत्र पर जल छोड़े तत्पशात् श्री यंत्र को (दूध, दही, घी, शुद्ध बुरा) पंचामृत से स्नान करायें और पंचोपचार पूजन कर श्री सूक्त, कनक धारा का पाठ करें तो लक्ष्मी जी अवश्य प्रसन्न होंगी। इसी प्रकार किसी भी यंत्र को सिद्ध मुहुर्त में सिद्ध किया जा सकता है।

दीपावली के शुभ अवसर पर विशेष यंत्रों की पूजा करनी चाहिए जैसे– व्यापार वृद्धि यंत्र, लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र, कुबेर यंत्र, धन वापसी यंत्र आदि ऐसे यंत्रों की पूजा हम दीपावली पर करेंगें तो निश्चित ही लक्ष्मी जी की आगमन अवश्य होगा। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

वाणी बने वीणा

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

सहिष्णुता और शिष्टाचार हम इसलिए खो रहे हैं, क्योंकि हम वाणी का मूल्य नहीं समझते। एक विद्वान ने कहा है– **"बोलिए संभलकर..... आपके शब्दों में एटम बम से भी अधिक शक्ति होती है।"** अपनी वाणी पर कठारे बचनों को न आने देने के प्रयास को अध्यात्म में **वाचिक तप कहा** जाता है। वाणी आत्मा की अभिव्यक्ति का माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने भावों को दूसरों तक पँहुचाते हैं। सत्य बोलने, कम बोलने और मधुर बोलने से बोलने वाले की वाणी सिद्ध हो जाती है– वह जो भी कहता है, वही सत्य हो जाता है। व्यर्थ बोलने की अपेक्षा मौन रह वाणी की प्रथम विशेषता है, सत्य बोलना दूसरी, प्रिय बोलना तीसरी और धर्म सम्मत बोलना चौथी विशेषता है।

शास्त्रों के अनुसार वाणी तीन प्रकार की हाती हैं– **परा, पश्यन्ती और मध्यमा।** चौथी वाणी भी होती है जिसे **परालौकिक** कहते हैं, जो पुरुषार्थ से प्राप्त होती है। मनुष्य को अहंकार शून्य शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। मीठे वचन वक्ता और श्रोता दोनों को सुख देते हैं तथा पुनः मिलने की चाहत पैदा करते हैं।, मुख पर प्रसन्नता, हृदय में दया, वाणी में मधुरता तथा कर्त्तव्य में परापेकार का भाव रखने वाले व्यक्ति समाज में वन्दनीय व प्रशंसनीय होते हैं।

मनुष्य को अपनी वाणी की शक्ति बढ़ाने के लिए अपनी श्रवण शक्ति को बढ़ाना चाहिए–ऐसा करने से आत्मविश्वास और सहनशीलता बढ़ेगी। समय, स्थान और श्रोता को ध्यान में रखते हुए ही बोलें। बड़ी से बड़ी बात भी कम शब्दों में कहने का प्रयास करें। प्रभाव हीन वाणी को कितने भी अलंकारिक ढंग से प्रस्तुत करें, फिर भी वह अनुपयोगी सिद्ध होगी। जिसके पास मधुर, सार्थक और उद्देश्य पूर्ण शब्दों से भरी वाणी नहीं हैं, वह अनेक गुणों का स्वामी होते हुए भी लोगों का दिल नहीं जीत सकता है। विनम्रता वाणी का श्रंगार है। प्रतिध्वनि ध्वनि का अनुसरण करती है। गुम्बज वाले मकानों में जो हम बोलते हैं, प्रतिध्वनि के रुप में हमें वही आवाज लौटकर सुनाई देती है। इसी प्रकार से दूसरों से हमें वही मिलता है और वैसा ही मिलता है– जैसा हम उनको देते हैं। जैसा बीज बोओगे, वैसा ही फल पाओगे।

बातचीत में केवल सही शब्दों का चयन करना ही पर्याप्त नहीं है। बात किस प्रकार तथा किस लहजे में कही गई है– यह अधिक मायने रखती है। इस विषय पर किए गए एक शोध के अनुसार सुनने वाले पर कहे गये शब्दों का प्रभाव 7 प्रतिशत वाणी के लहजे का 38 प्रतिशत और बोलने वाले के हावभाव व एक्सप्रैशन का 55 प्रतिशत प्रभाव पड़ता है। अतः एक मूर्तिकार की भाँति अपनी वाणी की कर्कशता को तराश कर अलग करें–फिर कठोरता की छँटाई करें– इसके बाद शालीनता रुपी रंग भरें और मिठास की पॉलिश करें।

किसी के दुकान–मकान, धन–दौलत आदि छीन लेने से बड़ा जुर्म है– कड़वे वचनों से उसके दिल को चूर–चूर कर देना। जिसकी जबान गन्दी होती है, उसका मन भी गन्दा होता है। एक दार्शनिक ने सच ही कहा है–

"इन्सान को जन्म लेने के बाद बोलना सीखने में दो साल लगते हैं- लेकिन क्या और कैसे बोलना है, यह सीखने में पूरी जिन्दगी निकल जाती है।"

यदि सीखना है तो मीठा बोलना सीखें, जिसकी महक दूर–दूर तक जायेगी और समाज में आपकी पहचान होगी। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसकी वाणी से वीणा जैसे स्वर ही निकलें, जिसके लिए जरुरत है निरन्तर अभ्यास की। बिना अभ्यास के वीण के तार छेड़ने से कर्कश स्वर ही झंकृत होगे। अभ्यास करते–करते एक दिन ऐसा आयेगा कि लोग आपकी वाणी की प्रशंसा करने लगेंगे कि वाणी में संयम रखने से वाक्शक्ति की एनर्जी जैनरेट होती है।

❋ ❋ ❋

500/- **1100/-**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621098, में जमा करा दे।

16 अक्टूबर - 15 नवम्बर

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। ध न लाभ होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में अपमान होने का भय रहेगा।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। पत्नि से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। चोट से बचें।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। यात्रा होना भी संभव है।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में विशेष हानि होने का भय रहेगा।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। नई योजनाओं से लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में वायु विकार संबंधी परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे। धन हानि होने का भय रहेगा।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। आय के बराबर व्यय होगा। रोग का भय रहेगा। लाभ की प्राप्ति होगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
20 अहोई अष्टमी **23** रमा एका.व्रत **24** प्रदोष व्रत, धन तेरस **25** नरक चौदश, **26** अमावस्या, श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपावली), **27** श्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट), **28** भाई दूज, **29** श्री विनायक चौथ, **31** पाण्डव पंचमी, श्रीमती गांधी पुण्य दिवस, सरदार बल्लभ भाई पटेल जयंती	**1** सूर्य षष्ठी, **2** जलराम जयंती, **3** गोपाष्टमी, **4** अक्षय नवमी, **6** देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह, **7** गुरुण द्वादशी (उड़ीसा), **8** प्रदोष व्रत, **9** बैकुण्ठ चौदस **10** पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती **14** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दिवस, बाल दिवस,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अक्टूबर – 24, 29
नवम्बर – 2, 7, 12

गृह प्रवेश मुहूर्त
अक्टूबर– 24, 29
नवम्बर– 2, 7, 12

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अक्टूबर – 29, 31
नवम्बर – 2, 6, 7

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अक्टूबर – 26 नवम्बर – 2, 13, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
17 ता. सू.उ. से सू.उ. तक 20 ता. सू.उ. से सू.उ. तक 30 ता. 11:57 से सू.उ. तक	12 ता. 9:42 से सू.उ. तक

16 **नवम्बर** - 15 **दिसम्बर**

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। फालतू विवादों से परेशान रहेगें। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। क्रोध मे वृद्धि होने की संभावना रहेगीं।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। धन लाभ होना भी संभव हैं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों से अनबन होना भी संभव हैं।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में धन हानि होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की सभांवना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें। व्यवसाय मे रूकावटें आयेगीं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। सम्पत्ति का लाभ होगा। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट रहेगा। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। शत्रुओं पर हावी रहेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में शरीरिक पीड़ा रहेगी। कारोबार मे हानि होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। इस मास में शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नवम्बर	दिसम्बर
19 काल भैरवाअष्टमी, इंदिरागांधी जं.	**1** भानु सप्तमी, विश्व एड्स डे, **2** दुर्गाष्टमी, **3** हरि नवमी, गुरु घासी दास जं., डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, विकलांग दिवस
21 उत्पत्ति एकादशी व्रत	**4** भारतीय नौ सेना दिवस
23 प्रदोष व्रत, श्री सांई बाबा जयंती	**6** मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती, **7** भारतीय झण्डा दि., प्रदोष व्रत
25 अमावस्या व्रत	**10** पूर्णिमा व्रत, श्री दत्तात्रोय जयंती, मानवाधिकार दिवस, **13** सौभाग्य सुन्दरी व्रत, **14** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **15** सरदार पटेल पुण्य दिवस,
28 श्री विनायक चतुर्थी व्रत,	
30 चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नवम्बर – 21
दिसम्बर – 1, 5, 10
गृह प्रवेश मुहूर्त
नवम्बर– 21, 28
दिसम्बर–1, 2, 5, 10
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
नवम्बर – 27
दिसम्बर – 1, 5, 7, 10, 11
नामकरण संस्कार मुहूर्त
नवम्बर – 21, 23, 25,
दिसम्बर – 1, 5

सर्वार्थ सिद्ध योग

नवम्बर	दिसम्बर
17 ता. सू.उ. से 17:24 तक	10 ता. सू.उ. से 18:31 तक
20 ता. 15:14 से सू.उ. तक	
25 ता. सू.उ. से 24:43 तक	
27 ता. सू.उ. से 20:59 तक	

'इधर का न उधर का'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

पिछले क्रमांक से आगे.....

राजा गिद्ध की बात सुनकर कुछ देर खामोश रहकर बोला, "मन्त्री! पहले मेरी सेना को देखो, फिर इकी कार्य में योग्यता जानों और एक अच्छे–से ज्योतिषी को भी बुलाकर अच्छा मुहूर्त निश्चित कर लो– जिस दिन हम युद्ध पर अपनी सेना को साथ लकेर उस मूर्ख राजा पर अपना आक्रमण कर सकें।"

मन्त्री ने राजा की बात सुनी और बोला– "फिर भी बिना सोचे अचानक यात्रा करना उचित नहीं है जो शत्रु के बलाबल को विचारे बिना युद्ध की ठाल लेते हैं वे अवश्य मरते हैं।"

राजा को मन्त्री की बात सुनकर क्रोध आया, वह क्रोधित स्वर में बोला, "मन्त्री! तुम मेरे उत्साह को भंग मत करो। ऐसी बात कहो जिससे मेरी विजय की कामना पूर्ण हो।"

गिद्ध राजा को क्रोध को देखकर, उसे आवेग में जानकर बड़े सोच–समक्षकर बोला, "वही कहता हूं महाराज! जिसे करना ही उचित है। जैसे औषधि के ज्ञान मात्र से रोगमुक्ति सम्भव नहीं है, उसी प्रकार शास्त्र–ज्ञान बिना व्यवहार में लाए व्यर्थ है। राजा की आज्ञा भंग नहीं करनी चाहिए–जैसा सुना है वैसा कहता हूं आप भी ध्यानपूर्वक सुनिये।" गिद्ध राजा को उपदेशी अन्दाज में बता रहा था।

"महाराज! नदी, पहाड़, वन तथा खतराक स्था, जहां–जहां भी रास्ते में भय अधिक हो वहां सेनापतियों को अपनी–अपनी टुकड़ियों के साथ मोर्चा सम्भाल लेा चाहिए। प्रधान सेनापति बड़े–बड़े योद्धाओं के साथ सबसे आगे–आगे चलें, बीच में स्त्रियां, स्वामी, खजाा और कमजोर सेना चलें। दोनों तरफ बाए–दाएं घोड़ों के पीछे रथ, रथों के दोों तरफ हाथी और हाथियों के आस–पास सेना का साहस बंधाए राजा मन्त्रियों के साथ बड़े–बड़े शूरवीर व सेा लेकर जाए।

जहां ऊंची–ऊंची, जल से भरी और पहाड़ियों से घिरी घाटियां हों उन्हें हाथियों से पार करें, समतल भूमि पर घोड़ों से, नदी–नालों को नाव से और पैदल सैनिक सब जगह फैलकर यात्रा करें।

बरसात में हाथियों पर, गर्मी व जाड़ों में घोड़ों पर जाए। पैदल सैनिकों के लिए सभी ऋतुएं अनुकूल होती हैं।

पहाड़ों और जंगली रास्तों में राजा को अपनी विशेष रक्षा करनी चाहिए। राजा को योद्धाओं से घिरे होने पर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी चाहिए।

राजा को चाहिए कि शत्रु के गढ़ को घेरकर शुत्र का नाश कर दे या उसे पकड़कर बदी बना ले। शत्रु के क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले जंगली लोगों को रास्ता बनाने तथा साफ करने के लिए आगे भेजना चाहिए।

जहां राजा हो वहां खजाना रहना चाहिए। बिना खजाने के राजा का राजस्व नहीं है। उसे शूरवीरों को धन देना चाहिए। देने वाले के लिए कौन नहीं लड़ता है? महाराज! मनुष्य का दास नहीं है, पर धन का दास अवश्य है। धन से ही बड़ा–छोटा होता है।

आपस में मिलकर शत्रु से लड़ना चाहिए और एक–दूसरे की रक्षा करनी चाहिए। राजा को चाहिए कि वह पैदल सेना को सबसे आगे रखे और शत्रु को चारों ओर से घेरकर उसे लूट लेा चाहिए जिससे उसकी शक्ति कम हो जाए। शत्रु के क्षेत्र का चारा, अन्न और जल दूषित कर देना चाहिए। तालाबों, किले की दीवारों और खाइयों को तोड़–फोड दे चाहिए। सेना में बल की दृष्टि से हाथी प्रदान होता है, क्योंकि वह अपने आठ अंगों (चार पैर, एक सूंड, एक पूंछ तथा दो दांत) से युद्ध में लड़ता है।

घुडसवार सेना भी युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस राजा के पास ज्यादा घुड़सवार होते हैं उसकी थल–युद्ध में विजय होती है। घुड़सवार शूरवीर राजा को तो देवता भी नहीं जीत सकते, क्योंकि बहुत दूर होने पर भी शत्रु उसके पास होता है।

पैदल सेना का काम है सबसे आगे रहकर युद्ध लड़े और रास्ता साफ करते हुए पूरी सेना की रक्षा करें।

सर्वश्रेष्ठ सेना वही है जिसमें सर्वाधिक क्षत्रिय हों, स्वभाव से शूरवीर, अस्त्र को चलाने में चतुर, युद्ध में पीठ न दिखाने वाला, परिश्रमी, वीरता में प्रसिद्ध हो। ऐसी सेना विद्वान लोग उत्तम बताते हैं।

महाराज! यह भी जान लेना लेना आवश्यक है कि संसार में हर कोई सम्मान का भूखा है, इसीलिए राजा से सम्मान पाकर लोग जितने उत्साह से लड़ते हैं उतना धन पाकर भी नहीं लड़ते। अधिक बलहीन सेना की अपेक्षा बलवान् थोड़ी–सी सेना अच्छी होती है। दुर्बल सैनिकों को युद्धभूमि से पीठ दिखाकर भोगकर देखकर बलवान् सैनिकों का भी उत्साह भंग हो जाता है।

सैनिको का मनोबल बनाए रखने के लिए राजा को पांच बातों पर अवश्य ध्यान दे चाहिए– (1) कभी अप्रसन्न न हो, (2) योग्य सेनानायकों को नियुक्त करे, (3) वेतन आदि में आलसरू न करें (4) दिये हुए धन को न छीने, (5) सैनिकों को कष्टों को दूर करने में सदैव तत्पर रहें। विजय की इच्छा रखने वाले राजा को अपनी सेना को रास्ते में विश्राम देना, अच्छे–अच्छे भोजन का सेवन कराना वरा थकी व भूखी सेा हार का कारण बन सकती हैं।

गुप्तचर विपक्ष में फूट डाल दें। यह काम अत्यनत सतर्कता के साथ करना चाहिए। जिससे शत्रु की सेा आपस में ही लड़े और मरे।

शत्रु को जीतने के लिए उसके मातहतों को लालच देकर अपने साथ मिला लेना चाहिए। जिससे शत्रु का बल कमजोर पड़ जाता है और अपनी विजय निश्चित हो जाती है।

इस तरह की गुपत सन्धि से शत्रु देश की जनता को उजाड़ कर अपने देश में सम्मान सहित लालच देकर बसाए। इस तरह बसाए गए लोगों से राज्य का धन–धान्य बढ़ता है। नीति यही है कि शत्रु की हानि और अपना लाभ हो।

बुद्धिमान इसी नीति पर चलकर अपनी चतुरता प्रकत करते हैं।" गिद्ध ने इतनी लम्बी बात सुनता–सुनता, युद्ध रणनीतियों को अपने दिमाग में बैठाता हुआ बोला, "मन्त्री महोदय! आपने सभी आवश्यक बाते बता दी हैं। पर मर्यादा के बन्धनों से स्वतन्त्र पराक्रम अलग होता है तथा शास्त्रों के नियमों में बंधा पराक्रम अलग। प्रकाश और अन्धकार काा एक जगह होना असम्भव है। अतः युद्ध में नीति विरुद्ध कदापि नहीं बदलना चाहिए।" इतना कहकर राजा चित्रवर्ण ने अपने एक अन्य मन्त्री से कहा, "मन्त्री! ज्योतिषी का क्या हुआ? आयाा याा नहीं?"

मन्त्री ने उत्सुकता दिखाते हुए कहा, "महाराज! मैंने ज्योतिषी को अतिथि गृह में आराम के लिए रखा हुआ है। यदि आपकी आज्ञा हो तो उन्हें दरबार में पेश करुं।"

"ज्योतिषी को दरबार में लाया जाये और उससे कोई अच्छा–सा मुहूर्त निकलवाया जाये। युद्ध की रणनीति हमारे पास तैयार है, बस अब तो एक अच्छे–से मुहूर्त की प्रतीक्षा है। मुहूर्त निकलते ही हम उसी दिन अपने शत्रु के देश की ओर कूच करेंगे और उसे अपनी सेना की शक्ति दिखाएंगे।" राजा ने अपना सीना फुलाकर कहा।

मन्त्री महोदय अतिथि गृह से ज्योतिषी को बुलाने गये। ज्योतिषी दरबार में हाजिर हुआ तो राजा ने उससे मुहूर्त निकालकर बताने की आज्ञा दी। कुछ देर बाद ज्योतिषी ने मुहूर्त निकालकर राजा को बताया। राजा ने ज्योतिषी को उसका इनाम देकर विदा किया और सेनापतियों तथा सेना के बड़े–बड़े अधिकारियों को युद्ध की तैयारी करने की आज्ञा दी। ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में सेना सहित राजा युद्ध के लिए विदा हुआ।

उधर प्रधान गुप्तचर द्वारा भेजे गए दूत ने हिरण्यगर्भ को सूचना दी–"महाराज! शत्रु राजा अब यहां पहुंचने वाला है। इस समय वह मलय पर्वत पर अपनी सेा के साथ पहाव डाले हुए है। उनकी गुप्त वार्ता के प्रसंग में मुझे ज्ञात हुआ है कि उसने हमारे किले में पहले से ही अपना गुप्तचर भेज रखा है।"

दूत की बात सुनकर चकवे के कान झनझनाए यदि ऐसा होता तो वह तोते को दरबार में अपमानित क्यों करता? वैसे भी वह उसी समय से शत्रु से लड़ने को उत्साहित है, और वह कौआ तो पहले से ही यहां रह रहा है।

"फिर भी महाराज! ऐसे समय में आने वाला सन्देह ही उत्पन्न करता है।" चकवा बोला। राजा हिरण्यगर्भ बोला, "कभी–कभी ऐसे समय में आने वाले भी बहुत उपकारी होते हैं। भलाई चाहने वाला शत्रु भी अपना बन्धु होता है।" राजा ने उसे एक मिसाल सुनाई–"जैसे शरीर में उत्पन्न रोग प्राणघात होता है जबकि वन में उत्पन्न जड़ी–बूटी प्राणरक्षक होती है। शूद्रक नाम के राजा के सेवन ने थोड़े–से समय में अपना पुत्र दे दिया।" "वो क्यों? यह कैसी कथा है?" चकवा चौंकर बोला। राजा बोला, "सुनो! मैं कथा कहता हूं।" यह कहकर राजा ने चकवे को सम्भल कर बैठ जाने का ओदश दिया तथा अपे जलपान के लिए अन्य दरबारियों को हुक्म दिया, "वे अपना और राजा के जलपान का प्रबन्ध करें।"

दो दरबारी जलपान का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से दरबार से बाहर आये और किचन से कुछ भोज्य पदार्थ लाकर राजा के सम्मुख पेश किए तथा बाद में उन दोनों ने भी जलपान किया।

राजा खाने–पीने से निपटकर बैठा और कथा कहनी आरम्भ की

शेष अगले क्रमांक में.....

❋ ❋ ❋

शेष पेज 6 से आगे.....

साथ कृष्ण भगवान् के हाथ में शोभायमान श्री शंख महानिधि को मैं प्रणाम करता हूँ।

पूजन :– अब दक्षिणावर्ती शंख का लाल चन्दन, अक्षत, पुष्प, ध ुप–दीप एवं कपूर से पूजन करें। तदुपरान्त शंख में गाय का कच्चा दूध भरें और अंत में नैवेध चढ़ाएँ।

स्तुति :– अब निम्नलिखित प्रकार से दक्षिणावर्ती शंख का ध्यान करें। उत्तम वर्ण के श्वेत आभा से युक्त लक्ष्मी के सहोदर तथा समस्त इच्छित वस्तु को देने वाले देवस्वरूप दक्षिणावर्ती शंख को में प्रणाम करता हूँ। समुद्र के पुत्र, मन की इच्छाओं का पूर्ण करने वाले तथा राज्य, धन, संतान आदि के फल को देने वाले शंख को में प्रणाम करता हूँ। हे दक्षिणावर्ती शंख आप कल्याणकर्ता, पापहारी, इच्छित दाता तथा विघ्नों से बचाने वाले है, अतः हे देव मेरे सभी मनोरथों को पूर्ण करो।

दरिद्रता दूर करने का मंत्र

"ऊँ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशाय धन धान्य समृद्धि देहि देहि दक्षिणावर्त शंखाय नमः। दक्षिणावर्ती शंख बहुत भाग्यशाली होता है। कुंकुम से शंख पर स्वास्तिक का चिह्न अंकित कर दें। फिर बायें हाथ से अक्षत का एक–एक दाना शंख में अर्पित करते हुए जपें। अगले दिन भी इसी मंत्र का जप करें। अक्षत अर्पित करते रहें। जिस दिन शंख पूरा भर जाय। तब तंत्र प्रयोग बंद कर दें तथा चावल के दानों के साथ शंख को उसी रेशमी लाल वस्त्रों में बांधकर पूजा के स्थान के स्थान पर अपने घर, फैक्ट्री या कंपनी के आफिस में स्थापित कर दें।

शेष पेज 11 से आगे.....

दिन शांत होता हैं और महालक्ष्मी जी शीघ्र प्रसन्न हो जाती हैं। यदि घर में या घर के आस–पास कोई विधवा महिला हो तो दीपावली वाले दिन उसे भोजन, उपहार, वस्त्र आदि श्रृद्धा से अवश्य देना चाहिए। ऐसा करने से सुहाग अमर होता हैं और परिवार में सुख बढ़ता हैं।

दूसरा उपाय यह हैं कि शनि मंत्र का और श्री यंत्र का अभिषेक पंचामृत से करें फिर शुद्ध जल में धोकर व पोंछकर, अश्टगंध ा , केशर , चंदन से यंत्रों को लेपित करें। पुष्प , धूप , दीप , अगरबत्ती से आरती करके प्रसाद, मिष्ठान का अर्पण करें। दोनों यंत्रों के आगे अलग–अलग थाली में एक व्यक्ति की खुराक के बराबर भोजन सजाकर रखें। रात्रि भर भोजन रखा रहने दें। दूसरे दिन वह भोजन श्रृद्धा से गाय को खिलाकर आयें।

तीसरा उपाय यह हैं कि दीपावली के दिन शनिदेव की प्रसन्नता व लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्ति हेतु महालक्ष्मी पूजन के मुहूर्त में हवन जरूर करें। हवन के लिए घर में ही यज्ञ कुण्ड जैसा बनाकर या किसी लोहे या ताँबे के पात्र में आम की लकड़ी, गोबर के कण्डे जलाकर घर में ही चारू सामग्री तैयार करके हवन करें। ये हवन की चारू सामग्री जो तिल , श्क्कर , घी , चांवल से मिलकर बनती हैं पूरे 108 बार शनि महामंत्र की इससे आहुति दें और 108 बार महालक्ष्मी मंत्र की इससे आहुति दें। शनिदेव को बाद में उड़द, तिल, गुड़ से बने पकवान अग्नि में समर्पित करें। लक्ष्मी जी को 33 बार खीर–पूड़ी की आहुति समर्पित करें। फिर एक–एक करके सूखा नारियल दोनों देवी–देवताओं के मंत्र के साथ पूर्णाहुति के लिए अग्नि में डालें। गुरू गणपति जी के लिए घी की आहुति दें। यह बड़ा

शेष पेज 13 **से आगे.....**

11. दीपावली की रात्रि में कुबेर यंत्र को पंचामृत से स्नान कराकर रोली कुमकुम, केशर, लाल चंदन के साथ घिसकर तिलक करें। शुद्ध घी के इक्कीस दीपक जलाकर रूद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का जाप करें तो धन लाभ अवश्य होगा।

12. दीपावली की रात्रि अभिमंत्रित सम्पूर्ण महालक्ष्मी यंत्र को पंच गव्य से शुद्धकर नागकेशर अर्पित करें व मूंगे की माला से निम्न मंत्र का 21 माला जाप करें। इस उपाय से आपके व्यवसाय में गति आयेगी।

13. यह लक्ष्मी गायत्री मंत्र है। यह सम्पति कारक तो है ही, व्यापार में भी विशेष रूप से वृद्धि करता है। इस मंत्र का जाप सफिटिक की माला से करें।

ऊँ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

14. एक नवीन पीले वस्त्र में नागकेसर, हल्दी, सुपारी, एक सिक्का, तांबे का टुकड़ा या सिक्का, चावल रखकर पोटली बना लें। इस पोटली को शिवजी के सम्मुख रखकर, धूप दीप से पूजन करके सिद्ध कर लें, फिर तिजौरी में कहीं भी रख दें।

15. नारियल को चमकीले लाल वस्त्र में लपेटकर घर में रखने से धन की वृद्धि होती है। व्यापार पर रखने से व्यापार में वृद्धि होती है। जिस घर में एकांक्षी नारियल होता है, वहाँ स्वयं लक्ष्मी वास करती हैं। रोग, शोक, दुःख, कष्ट, विपत्ति, दारिद्रय नष्ट होता है एंव मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, यश प्राप्त होता है। व्यापार दिनो दिन बढता है।

16. रात्रि 10 बजे के पश्चात् सब कार्यों से निवृत्त होकर, उत्तर दिशा की और मुख करके पीले आसन पर बैठ जाएं अपने सामने नौ तेल के दीपक जला लें। यह दीपक साधनाकाल तक जलते रहने चाहिएं। दीपक के सामने एक लाल चावल की ढेरी बनाएं, उस पर श्री यंत्र रखें। उनका भी कुंकुम, धूप, दीप से पूजन करें और उसके पश्चात् सामने किसी प्लेट पर स्वास्तिक बनाकर पूजन करें।

17. रात्रि 10 बजे के पश्चात्, अपने सामने चौकी पर एक पानी से भरा हुआ कलश रखें, उसमें शुद्ध केसर से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर उसमें पानी भर दें, उसके पश्चात् चावल, भरके रख दें, उसके ऊपर श्री यंत्र स्थापित कर दें, कुंकुम अक्षत से पूजन करें और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति के लिए कामना करें।

❋❋❋

शेष पेज 14 **से आगे.....**

गल्ले के ऊपर रोली, केसर व कपूर से स्वास्तिक बनाकर लाल कमल पुष्प चढ़ायें। संतों व सिद्धो के उपयोग द्वारा किया गया यह प्रयोग श्री बृद्धि और वैभव को स्थिर बनाने में परम सहायक है।

8. दक्षिणावर्त्ती शंख धन वर्षा शंख कहलाता है इसे लक्ष्मी का सहोदर भी माना जाता है श्री समृद्धि का प्रतीक यह शंख जहाँ रहता है वहाँ अवश्य ही लक्ष्मी का निवास होता है। विष्णु और लक्ष्मी के प्रिय शंख की पूजा करने पश्चात लक्ष्मी मंत्र का जाप करते हुये शंख का भरा जल अपने व दूसरों पर छिड़के से दरिद्रता का नाश होता है।

9. दीपावली और हनुमान जयन्ती जैसे शुभ मुहूर्त में अजर अमर हनुमान जी की कृपा प्राप्त करने के लिये सुन्दरकाण्ड का पाठ व हनुमान चालीस का पाठ करें, हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाये जिससे वर्ष पर्यन्त सुख शान्ति बनी रहें परिवार में कोई संकट ना आयें।

10. महालक्ष्मी की शुभ मुहूर्त में पूजा करले के पश्चात लक्ष्मी के प्रिय श्री सूक्त का पाठ अपनी समर्थ के अनुसार धन त्रयोदशी से लेकर भाईदूज तक प्रातः व संध्या काल में अवश्य करें क्योंकि इन ऋचाओं में महालक्ष्मी की अद्भुत महिमा बताई गई हैं श्री सूक्त का पाठ एक ऐसी साधना बताई गई है जिससे व्यक्ति को मनोरथ सफल होते हैं। इस दिन स्फटिक व कमल गट्टे की माला से लक्ष्मी मन्त्र का जाप भी करें "ऊँ महालक्ष्म्यै नमः" नूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ऋग्वेदोक्त श्री सूक्त की ऋचाओं का पाठ करते हुये शुद्ध घृत से हवन किया जाये तो इसका दुगना फल व्यक्ति को मिलता है धनागम के साधन सरलता से प्राप्त होने लगते हैं। व्यापार में लाभ व परिवार में सुख शान्ति का अनुभव होने लगता है। ऋग्वेद में तो यहाँ तक कहा गया है कि श्री सूक्त की साधना दरिद्रता रुपी दावानल का नाश करती है।

11. लक्ष्मी, गणेश के पूजन के साथ धन के अध्यक्ष कुबेर देवता अथवा कुबेर यंत्र की भी पूजा अर्चना करनी चाहिए क्योंकि कुबेर देवता नौ निधि व अनन्त वैभव के स्वामी है। यदि कुबेर यंत्र खरीदने की सार्मथ्य ना हो तो एक सुपारी पर कलावा बाँधकर उसे पूजा स्थल में रखकर उसे कुबेर देवता मानकर कुबेर मंत्र से पूजन करें जिससे आप स्वयं अनन्त वैभव तथा धन सम्पत्ति के स्वामी बनें।

❋❋❋

500/- **1100/-**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621098, में जमा करा दे।

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262